चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	2-9-26	02	4-7

The Tribune
ESTABLISHED IN 1881

Agri university scientists to conduct research on microplastic pollution

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, SEPTEMBER 1

To assess the extent and impact of microplastic pollution in the state's agricultural ecosystems, Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has received approval for a research project from the Haryana State Higher Education Council under the Haryana State Research Fund for a project, "Distribution, Risk Assessment and Development of Mitigation Strategies for Microplastic Pollution in Agricultural Ecosystems of Haryana".

The two-year project will be led by Dr Anil Duhan, Assistant Scientist, Department of Chemistry. Dr Jayant Sindhu and Dr Ravi Kumar will serve as Co-Investigators. A budget of Rs 19.11 lakh has been sanctioned for the project.

Vice-Chancellor Prof Baldev Raj Kamboj said that the increasing use of plastics has led to a continuous rise in plastic residues in the environment, making the problem increasingly serious. The agricultural sector has also not remained unaffected, as microplastics can contaminate agricultural soils, irrigation water and crops. This growing concern forms the basis of the proposed research project.

HAU scientists and officials with Vice-Chancellor Prof Baldev Raj Kamboj.

Under the project, scientists will collect and analyse samples of soil, irrigation water, treated and untreated sewage water and crops irrigated with such water from different districts of Haryana. The study will assess the presence and concentration of microplastics, evaluate their potential adverse effects and explore sustainable strategies for their mitigation and management.

The VC said that micro plastic pollution is not merely an environmental issue but is directly linked to soil health, crop productivity and food safety. He said that the increasing use of plastics in agriculture, particularly plastic mulch, irrigation water and other agricultural practices, may facilitate the entry of microplastic particles into agricultural fields, which is a matter of concern. He further said that microplastics can persist in soil for long periods and may adversely affect its physical, chemical and biological properties. Emphasising that healthy soil is the foundation of healthy crops and safe food production, he said it is essential to understand and address the growing impact of microplastics at an early stage.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	2-9-26	04	1-4

स्वीकृति • मिट्टी, फसल और पानी के सैंपल लेकर तलाशे जाएंगे निस्तारण के उपाय

खेतों में प्लास्टिक का जोखिम : एचएयू वैज्ञानिक करेंगे माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर रिसर्च, ₹19.11 लाख मंजूर

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि कॉलेज को हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के तहत एक अहम रिसर्च प्रोजेक्ट की मंजूरी मिली है। हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास विषय पर यह शोध 19.11 लाख के बजट से पूरा होगा।

प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण के साथ अब कृषि क्षेत्र के लिए भी गंभीर चुनौती बन चुका है। प्लास्टिक मल्चिंग, सिंचाई जल और सीवरेज के पानी से माइक्रोप्लास्टिक के कण खेतों तक पहुंच रहे हैं। ये कण मिट्टी में लंबे समय तक टिके रहकर उसकी भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणवत्ता को नुकसान पहुंचाते हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि दो वर्षीय इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन करेंगे। साथ डॉ. जयंत सिंधु और डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक रहेंगे।एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण केवल पर्यावरण से जुड़ी समस्या नहीं है, बल्कि यह मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन, खाद्य सुरक्षा से सीधे तौर पर जुड़ा विषय है। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के तहत 19.11 लाख का रिसर्च प्रोजेक्ट मिला है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, केमेस्ट्री विभागाध्यक्ष डॉ. रजनीकांत शर्मा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग और मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य मौजूद रहे।

एचएयू कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ वैज्ञानिक एवं अन्य।

प्रदेश से लिये जाएंगे सैंपल

प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ने की वजह से इसके अवशेष पर्यावरण में बढ़ते जा रहे हैं और यह समस्या विकराल होती जा रही है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा और कृषि भूमि, सिंचाई योग्य जल एवं फसलों को भी माइक्रोप्लास्टिक प्रभावित कर सकते हैं। यही इस शोध का आधार है जिसमें वैज्ञानिक हरियाणा में अलग-अलग जिलों से मिट्टी, सिंचाई योग्य पानी, ट्रिटिड एवं अनट्रिटिड सिवरेज जल एवं इस जल से सिंचित फसलों के नमूने लिए जाएंगे। इन नमूनों की जांच कर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा एवं दुष्प्रभाव जानने की कोशिश करेंगे एवं उनके सतत निस्तारण के तरीकों की खोज भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	2-9-24	04	1-2

हकृवि के वैज्ञानिक डॉ. अनिल दूहन माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण पर करेंगे शोध

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज के साथ वैज्ञानिक एवं अन्य।

माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर शोध के लिए 19.11 लाख रुपए की परियोजना स्वीकृत

हिसार, 1 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के अंतर्गत एक शोध परियोजना को मंजूरी दी गई है। परियोजना का विषय 'हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास' है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ने की वजह से इसके अवशेष पर्यावरण में बढ़ते जा रहे हैं और यह समस्या विकराल होती जा रही है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा और कृषि भूमि, सिंचाई योग्य जल एवं फसलों को भी माइक्रोप्लास्टिक प्रभावित कर सकते हैं। यही इस शोध का आधार है जिसमें वैज्ञानिक हरियाणा में अलग-अलग जिलों से मिट्टी, सिंचाई योग्य पानी, ट्रिटिड एवं अनट्रिटिड सिवरेज जल एवं इस जल से सिंचित फसलों के नमूनों की जांच कर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा एवं दुष्प्रभाव जानने की कोशिश करेंगे एवं उनके सतत निस्तारण के तरीकों की खोज भी करेंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि दो वर्ष की इस परियोजना का नेतृत्व रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दूहन करेंगे। डॉ. जयंत सिंधु एवं डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक के रूप में परियोजना में कार्य करेंगे। इस परियोजना के लिए 19.11 लाख रुपए का बजट स्वीकृत किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	2-9-26	14	6-7

एचएयू को माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर शोध परियोजना की मंजूर

- कृषि इकोसिस्टम में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण के असर पर वैज्ञानिक डॉ. दुहन करेंगे रिसर्च
- स्वस्थ मिट्टी और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर नियंत्रण जरूरी : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालयको हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण शोध परियोजना की मंजूरी मिली है। इस परियोजना का विषय 'हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास' तय किया गया है। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि प्लास्टिक के बढ़ते इस्तेमाल से इसके अवशेष पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या बनते जा रहे हैं। कृषि क्षेत्र, उपजाऊ भूमि, सिंचाई जल और फसलें भी इससे अछूती नहीं हैं।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ वैज्ञानिक एवं अन्य। फोटो : हरिभूमि

19.11 लाख का बजट मंजूर 2 साल में पूरा होगा प्रोजेक्ट

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि 19.11 लाख रुपए के बजट वाली इस 2 वर्षीय परियोजना का नेतृत्व रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन करेंगे। डॉ. जयंत सिंधु एवं डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक के रूप में कार्य करेंगे। इस शोध परियोजना से प्रदेश में पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ कृषि व्यवस्था विकसित करने की दिशा में बड़ा योगदान मिलने की उम्मीद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	02-09-26	02	1-2

माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर शोध करेगी एचएयू, बजट को मंजूरी

कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज के साथ वैज्ञानिक और अन्य। स्रोत : विवि

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर शोध के लिए दो वर्षीय परियोजना मिली है। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद ने परियोजना के लिए 19.11 लाख रुपये का बजट मंजूर किया है।

इसके तहत हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण का आकलन कर उसके निस्तारण की रणनीतियां विकसित की जाएंगी। कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने बताया कि प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग से पर्यावरण में इसके अवशेष बढ़ रहे हैं, जिसका असर

दो वर्षीय परियोजना के लिए 19.11 लाख रुपये मंजूर

कृषि क्षेत्र पर भी पड़ रहा है। माइक्रोप्लास्टिक मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन और खाद्य सुरक्षा से सीधे जुड़ा है।

स्वस्थ मिट्टी सुरक्षित खाद्य उत्पादन की आधारशिला है इसलिए इसके प्रभावों को समझना और नियंत्रित करना जरूरी है। वैज्ञानिक हरियाणा के विभिन्न जिलों से मिट्टी, पानी और फसलों के नमूने लेकर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा और उसके दुष्प्रभावों का अध्ययन करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	01.09.2026	-----	----

हकृवि के वैज्ञानिक डॉ. अनिल माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण पर करेंगे शोध, 19.11 लाख रुपए की परियोजना स्वीकृत

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के अंतर्गत एक शोध परियोजना को मंजूरी दी गई है। परियोजना का विषय 'हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास' है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ने की वजह से इसके अवशेष पर्यावरण में बढ़ते जा रहे हैं और यह समस्या विकराल होती जा

रही है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा और कृषि भूमि, सिंचाई योग्य जल एवं फसलों को भी माइक्रोप्लास्टिक प्रभावित कर सकते हैं। यही इस शोध का आधार है जिसमें वैज्ञानिक हरियाणा में अलग-अलग जिलों से मिट्टी, सिंचाई योग्य पानी, ट्रिटिड एवं अनट्रिटिड सिवरेज जल एवं इस जल से सिंचित फसलों के नमूनों की जांच कर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा एवं दुष्प्रभाव जानने की कोशिश करेंगे एवं उनके सतत निस्तारण के तरीकों की खोज भी करेंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि दो वर्ष की इस परियोजना का नेतृत्व रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन करेंगे। डॉ. जयंत सिंधु एवं डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक के रूप में परियोजना में कार्य करेंगे। इस परियोजना के लिए 19.11 लाख रुपए का बजट स्वीकृत किया गया है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. रजनीकांत शर्मा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	01.09.2026	-----	----

हकृवि के वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण पर करेंगे शोध

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के अंतर्गत एक शोध परियोजना को मंजूरी दी गई है। परियोजना का विषय 'हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास' है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ने की वजह से इसके अवशेष पर्यावरण में बढ़ते जा रहे हैं और यह समस्या विकराल होती जा रही है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा और कृषि भूमि, सिंचाई योग्य जल एवं फसलों को भी माइक्रोप्लास्टिक प्रभावित कर सकते हैं। यही इस शोध का आधार है जिसमें वैज्ञानिक हरियाणा में अलग-अलग जिलों से मिट्टी, सिंचाई योग्य पानी, ट्रिटिड एवं अनट्रिटिड सिवरेज जल एवं इस जल से सिंचित फसलों के नमूनों की जांच कर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा एवं दुष्प्रभाव आंकने की कोशिश करेंगे एवं उनके सतत निस्तारण के तरीकों की खोज भी करेंगे। कुलपति ने कहा कि माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण केवल पर्यावरण से जुड़ी समस्या नहीं है, बल्कि यह मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन, खाद्य सुरक्षा से सीधे तौर पर जुड़ा विषय है। उन्होंने कहा कि कृषि में प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग, विशेषकर प्लास्टिक मल्च, सिंचाई जल और अन्य कृषि गतिविधियों के माध्यम से माइक्रो प्लास्टिक कणों का खेतों तक पहुंचना चिंता का विषय है। ये कण मिट्टी में लंबे समय तक बने रहकर उसकी भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मिट्टी ही स्वस्थ फसल और सुरक्षित खाद्य उत्पादन की आधारशिला है, इसलिए माइक्रोप्लास्टिक के बढ़ते प्रभाव को समय रहते समझना और नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि दो वर्ष की इस परियोजना का वैतृष्य रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन करेंगे। डॉ. जयंत सिंधु एवं डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक के रूप में परियोजना में कार्य करेंगे। इस परियोजना के लिए 19.11 लाख रुपए का बजट स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त इन शोध परियोजनाओं से प्रदेश में पर्यावरण-अनुकूल, टिकाऊ एवं सुरक्षित कृषि व्यवस्था विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, केमेस्ट्री विभाग के अध्यक्ष डॉ. रजनीकांत शर्मा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	02.09.2026	-----	----

स्वस्थ मिट्टी और सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण पर नियंत्रण जरूरी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 2 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा हरियाणा राज्य अनुसंधान निधि के अंतर्गत एक शोध परियोजना को मंजूरी दी गई है। परियोजना का विषय 'हरियाणा के कृषि इकोसिस्टम में माइक्रो प्लास्टिक प्रदूषण का वितरण, जोखिम आकलन एवं निस्तारण रणनीतियों का विकास' है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ने की वजह से इसके अवशेष पर्यावरण में बढ़ते जा रहे हैं और यह समस्या विकराल होती जा रही है। इससे कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा और कृषि भूमि, सिंचाई योग्य जल एवं फसलों को भी माइक्रोप्लास्टिक प्रभावित कर सकते हैं। यही इस शोध का आधार है जिसमें वैज्ञानिक हरियाणा में अलग-अलग जिलों से मिट्टी, सिंचाई योग्य पानी, ट्रिटिड एवं अनट्रिटिड सिवरेज जल एवं इस जल से सिंचित फसलों के नमूनों की जांच कर उनमें माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा एवं दुष्प्रभाव जानने की

कोशिश करेंगे एवं उनके सतत निस्तारण के तरीकों की खोज भी करेंगे। कुलपति ने कहा कि माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण केवल पर्यावरण से जुड़ी समस्या नहीं है, बल्कि यह मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन, खाद्य सुरक्षा से सीधे तौर पर जुड़ा विषय है। उन्होंने कहा कि कृषि में प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग, विशेषकर प्लास्टिक मल्च, सिंचाई जल और अन्य कृषि गतिविधियों के माध्यम से माइक्रो प्लास्टिक कणों का खेतों तक पहुंचना चिंता का विषय है। ये कण मिट्टी में लंबे समय तक बने रहकर उसकी भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मिट्टी ही स्वस्थ फसल और सुरक्षित खाद्य उत्पादन की आधारशिला है, इसलिए माइक्रोप्लास्टिक के बढ़ते प्रभाव को समय रहते समझना और नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि दो वर्ष की इस परियोजना का नेतृत्व रसायन विज्ञान विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल दुहन करेंगे। डॉ. जयंत सिंधु एवं डॉ. रवि कुमार सह-अन्वेषक के रूप में परियोजना में कार्य करेंगे। इस परियोजना के लिए 19.11 लाख रूपए का बजट स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त इन शोध परियोजनाओं से प्रदेश में पर्यावरण-अनुकूल, टिकाऊ एवं सुरक्षित कृषि व्यवस्था विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, केमेस्ट्री विभाग के अध्यक्ष डॉ. रजनीकांत शर्मा व मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य उपस्थित रहे।